मानमिन समाचार

अकं 50, वर्ष 3 1 मार्च 2023

नए साल में पहली 'ईश्वरीय चंगाई सभा'

13 जनवरी को रात 8:30 बजे शुरू हुई शुक्रवार की संपूर्ण रात्रि सभा के दौरान, 2023 में पहली 'बीमारों के लिए ईश्वरीय चंगाई सभा' एक्टिंग सीनियर पास्टर डॉ. सुजिन ली की अगुवाई में आयोजित की गई थी।

जीसीएन (www.gcntv.org) के माध्यम से उपग्रह, यूट्यूब और इंटरनेट के माध्यम से संसार भर में लाइव प्रसारण के दौरान सभा आमने–सामने आयोजित नहीं की गई थी। डॉ. सुजिन ली ने "पश्चाताप के फल" (मत्ती 3:5–10) शीर्षक से संदेश दिया, और उन्होंने सामर्थी रूमाल के साथ ईमानदारी से प्रार्थना की (प्रेरितों के काम 19:11–12) जिस पर सीनियर पास्टर डॉ. जेरॉक ली ने प्रार्थना की थी। देश–विदेश से पंजीकरण कराने वालों में से एक–एक करके बीमारियों के नाम पुकारते हुए प्रार्थना की गई।

परिणामस्वरूप, सदस्य जो अपनी विभिन्न बीमारियों से चंगे हो गए थे और समय और स्थान से परे अपने हृदय की इच्छाओं का उत्तर प्राप्त कर चुके थे, उन्होंने वास्तविक समय की गवाहियों के साथ परमेश्वर की महिमा की।

भारत में, बहुत से लोग ईश्वरीय चंगाई सभा में भाग लेकर चंगाई प्राप्त कर रहे हैं। अगर आप भी चमत्कार का अनुभव करना चाहते हैं तो हमसे संपर्क करें। हमारे भारतीय सहायक आपकी मदद करेंगे। +91 99716 24368

"मधुमेह(शुगर) की जटिल स्थिति के कारण मेरा बायां पैर कटने के कगार से बच गया।"

उर्मिला (उम्र 50, कोरबा, छत्तीसगढ़, भारत)

अक्टूबर 2022 की शुरुआत में, मेरे बाएं पैर में एक फोड़ा हो गया था, जो धीरे–धीरे बढ़ता गया, जिससे मुझे बुखार और पैर में दर्द हुआ और अंततः इसमें मवाद बन गया।

क्योंकि इसमें कोई सुधार नहीं हुआ, मैं अस्पताल गई और मुझे बताया गया कि मेरे बाएं पैर को काटना होगा क्योंकि मेरा मधुमेह(शुगर) का स्तर 400 से अधिक था और जटिल स्थिति के कारण मेरे पैर का घाव बड़ा हो रहा था।

ठीक होने से पहले

मुझे 20 साल से मधुमेह और उच्च रक्त शर्करा (High Blood Sugar) है, यही वजह है कि एक फोडे का इतना भयानक परिणाम हुआ। जब मुझे बताया गया कि मेरा बायाँ पैर काटना पड़ेगा, तो मैं बहुत चिंतित, घबराई हुई थी और मेरा दिल टूट गया था कि मैं कैसे चलूँगी, कैसे अपने बच्चों की देखभाल करूँगी, और पैर कटने के बाद अपना दैनिक जीवन कैसे जीऊँगी। इसके अलावा, मेरे बाएं पैर में असहनीय दर्द के कारण मैं मुश्किल से 20 दिनों तक खा नहीं पाई।

मैं हताश मन से यू–ट्यूब पर बीमारों के लिए प्रार्थना ढूंढने लगी। इस बीच, मुझे जीसीएनटीवी हिंदी चैनल पर, 'डॉ. जेरॉक ली की बीमारों के लिए प्रार्थना' मिली। मैंने, दिल्ली मानमिन चर्च चैनल संचालक से मेरी चंगाई के लिए प्रार्थना करने को कहा।

दिल्ली मानमिन चर्च के कार्यकर्ताओं ने दयालुता के साथ उत्तर प्राप्त करने के मार्ग पर मेरी अगुवाई की। उन्होंने मुझे पहले 'क्रूस का संदेश' नामक संदे ा सुनने और प्रभु के दिन को पवित्र रखने के लिए बताया, ताकि मैं अपने पापों का पश्चाताप कर सकूं। और उन्होंने खुशखबरी दी कि नवंबर में जीसीएनटीवी हिंदी के माध्यम से मैं कोरिया के मानमिन सेंट्रल चर्च में आयोजित ईश्वरीय चंगाई सभा में प्रार्थना ग्रहण कर सकती हूं।

चूँकि मुझे लगा कि परमेश्वर स्वयं मेरा मार्गदर्शन कर रहा है, इस आशा के साथ कि मैं चंगी हो सकती हूँ, मैंने एक–एक करके उनका अभ्यास किया जैसा उन्होंने मुझे सिखाया था, भले ही मेरा शरीर बहुत थका हुआ और असहज था। साथ ही, चंगे होने की आशा ने मुझे और अधिक उत्सुक बना दिया, जिससे मैं दर्द पर काबू पाने और प्रार्थना करने में सक्षम हो गई।

फिर एक दिन क्रूस का सन्देश सुनते हुए मुझे पता चला कि मूर्तिपूजा करना पाप है। मैं 8 साल से चर्च जा रही थी, लेकिन यह पहली बार था जब मैंने डॉ जेरॉक ली के संदेश को सुनने के बाद यह सीखा। मैंने तुरंत मूर्तियों की पूजा करना बंद कर दिया और अपने पापों का पश्चाताप किया।

25 नवंबर को, मैंने जीसीएनटीवी हिंदी के माध्यम से ईश्वरीय चंगाई सभा में डॉ. सूजिन ली, एक्टिंग सीनियर पास्टर की प्रार्थना ग्रहण की। उस समय, सबसे पहले मैंने महसूस किया कि पवित्र आत्मा मुझ पर उतरा है, और मेरे पूरे शरीर पर पसीना आया। देश और विदेश के विश्वासियों की वास्तविक समय में गवाही सुनकर, मुझे विश्वास हो गया कि मैं भी चंगी हो सकती हूं।

उसके बाद, मैंने रविवार की आराधना सभा को नहीं छोड़ा, और मैंने दशमांश दिया। संदेश सुनते समय मुझे जिन पापों के बारे में अहसास हुआ, उनके लिए मैंने तुरंत पश्चाताप किया। साथ ही, यह जानते हुए कि पिता परमेश्वर सुसमाचार प्रचार करने से प्रसन्न होते हैं, मैंने अपने रिश्तेदारों और पड़ोसियों को सुसमाचार सुनाया।

उसके बाद, मुझे आराम महसूस हुआ, मेरे बाएं पैर का दर्द धीरे–धीरे गायब हो गया, और मैं अच्छी तरह से खाने में सक्षम हो गई। इतना ही नहीं, जितना अधिक मैंने आराधना की और प्रार्थनाएँ ग्रहण कीं, मेरे पैर का घाव उतना ही भर गया, और अंततः मुझे अपना बायाँ पैर काटने की आवश्यकता नहीं पड़ी। हाल्लेलुयाह!

मैं प्रेमी त्रिएक परमेश्वर को सारा धन्यवाद और महिमा देती हूं जिसने मेरे जीवन में महान कार्य किए हैं।

ठीक होने के बाद

परमेश्वर ज्योति है।

शारीरिक विश्वास और आत्मिक विश्वास

"अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है। क्योंकि इसी के विषय में प्राचीनों की अच्छी गवाही दी गई। विश्वास ही से हम जान जाते हैं, कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। यह नहीं, कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो।'' (इब्रानियों 11:1–3)

सीनियर पास्टर रेव्ह. जेरॉक ली

विश्वास खजानों का सबसे कीमती खजाना है और जीवन की सभी समस्याओं को हल करने की कुंजी है। ऐसा इसलिए है क्योंकि सर्वशक्तिमान परमेश्वर, सृष्टिकर्ता, ऐसे काम कर सकता है जो मनुष्यों की ताकत या क्षमता से नहीं किए जा सकते। विश्वास हो तो रोग, पारिवारिक समस्या, व्यापार और असंख्य समस्याओं का उत्तर पाने में कोई कठिनाई नहीं होगी। विश्वास को ध्यान में रखते हुए, एक सच्चा, आत्मिक विश्वास है जिसे परमेश्वर स्वीकार कर सकता है और दूसरा शारीरिक विश्वास भी है जिसे परमेश्वर स्वीकार नहीं करेगा।

1. शारीरिक विश्वास क्या है?

सबसे पहले, शारीरिक विश्वास वह विश्वास है जिसके साथ आप उस पर विश्वास करते हैं जो आपके विचारों और ज्ञान से मेल खाता है। यदि मैं कहूँ, 'इस तौलिये का रंग सफेद है,' तो जो लोग इसे सफेद देखेंगे, वे मेरी बातों पर विश्वास करेंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह उस ज्ञान के अनुसार है जो आपने अपने जन्म से सीखा है। संसार के लोग भी इस प्रकार का विश्वास रख सकते हैं। दुनिया में कुछ चीजें ऐसी होती हैं जिन पर लोग भरोसा करते है और उन्हें सच मान लेते हैं, लेकिन कुछ चीजें ऐसी भी होती हैं जो समय के साथ बदल जाती हैं। साथ ही, अलग–अलग देशों की संस्कृतियों में, अलग–अलग जातीय समूहों के साथ, और यहां तक कि व्यक्तियों के बीच भी सोचने के मानक और तरीके बहुत अलग हैं।

उदाहरण के लिए, बहुत समय पहले लोगों को मालूम हुआ कि पृथ्वी गोल नहीं बल्कि चपटी है। वो यह भी मानते थे कि सूर्य पृथ्वी की परिक्रमा करता है। उस समय लोग इसे सच मानते थे, लेकिन आज कोई भी इसे सच नहीं मानता। आज भी यदि कोई किसी व्यक्ति को सच कहता है, तो वह सत्य को सत्य नहीं मान सकता है यदि वह स्वयं के ज्ञान से मेल नहीं खाता है। क्योंकि उन्हें सिखाया गया है और उन्होंने सीखा है कि "डार्विनवाद" नामक झूठा सिद्धांत सत्य है, वे सृष्टिवाद में विश्वास नहीं करते, जो वास्तव में वास्तविक सत्य है। लाखों–करोड़ों वर्षों के बाद भी मछली न तो स्थलीय जंतु के रूप में विकसित हो सकती है और न ही वानर बन सकती है। लेकिन जिन लोगों ने इस सिद्धांत को सीखा है, उनका दृढ़ विश्वास है कि विकासवाद सत्य है। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि वे सर्वशक्तिमान परमेश्वर में विश्वास करते हैं, लेकिन वे पूरी तरह से बाइबल पर विश्वास नहीं करते। वे केवल बाइबल के उन्हीं भागों को स्वीकार करते हैं जो उनके सिद्धांतों और ज्ञान से सहमत होते हैं। वे विश्वास नहीं कर सकते कि आकाश और पृथ्वी शून्य से परमेश्वर के वचन द्वारा रचे गए हैं। साथ ही, वे किए गए उन सामर्थी कार्यों को भी नहीं समझ सकते हैं जो मनुष्यों की ताकत से असंभव हैं। इसलिए, जब वे चिन्हों और चमत्कारों के बारे में पढ़ते हैं, तो वे सोचते हैं कि वे वास्तव में घटित नहीं हो सकते थे, लेकिन यह किसी और चीज का केवल एक दृष्टांत या प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व है। यदि कहें कि पतरस पानी पर चला, तो वे व्याख्या करते हैं कि वह उथले भाग या उपरी भाग पर चला। यदि किसी को यह बताया जाए कि उसकी बीमारी आप्रेशन से और दवा खाने से ठीक हो गई, तो वे मान लेते हैं। लेकिन, जब वे सुनते हैं कि कोई केवल प्रार्थना से ठीक हो गया है, तो वे इस पर संदेह करते हैं और मानते हैं कि इसमें कुछ और शामिल होना चाहिए। इस प्रकार का विश्वास आत्मिक विश्वास नहीं है और यह ऐसा विश्वास नहीं है जिसके द्वारा हम उद्धार प्राप्त कर सकते हैं। इस तरह के विश्वास से परमेश्वर का कोई लेना–देना नहीं है। सच्चा विश्वास यह विश्वास करना है कि बाइबल के सभी वचन परमेश्वर पूर्ण सत्य हैं चाहे हमने किसी भी प्रकार का ज्ञान प्राप्त किया हो।

दूसरा, शारीरिक विश्वास वह विश्वास है जो बदलता रहता है। कुछ लोग कठिन प्रार्थना करते हैं, लगन से परमेश्वर की आराधना करते हैं और अपने हृदय की इच्छाओं का उत्तर प्राप्त करने के लिए एक उत्साही मसीही जीवन व्यतीत करते हैं। लेकिन अगर उन्हें जल्दी से जवाब नहीं मिलता है, तो वे संदेह करने लगते हैं। यदि वे संदेह करने लगते हैं, तो वे अनुग्रह खो देते हैं। इसलिए, वे सोचते हैं कि वो उत्तर जो उन्हें पहले प्राप्त हुए थे वो एक संयोग था या उत्तर प्राप्त करने वाले अन्य लोगों की गवाहियां भी संयोग थीं। उत्तर पाने के लिए उनके सभी कार्य सच्चे विश्वास से नहीं थे (याकूब 1:6–7)।

आपको विश्वास करना चाहिए कि आपको वह सब कुछ मिल गया है जिसके लिए आप प्रार्थना करते हैं और मांगते हैं (मरकुस 11:24)। इसलिए, यदि आप विश्वास के साथ प्रार्थना ग्रहण करते हैं, तो आपके जीवन में फिर से पीड़ा नहीं होगी, लेकिन आप आनंदित, धन्यवादी और आशा से भरे रहेंगे। साथ ही, केवल जब आपका विश्वास नहीं बदलता है, हालाँकि अभी आपके पास प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं हैं, तो आपके विश्वास को 'सच्चे वि वास' के रूप में पहचाना जा सकता है।

तीसरा, शारीरिक विश्वास वह विश्वास है जिसके साथ कार्य नहीं होते।

परमेश्वर के वचन को जानना और उस पर विश्वास करना अलग–अलग बातें हैं। जब हम न केवल अपने सिर में बल्कि अपने हृदय के गहरे हिस्से में वचन पर विश्वास करते हैं, तभी हमारे विश्वास का पालन वचन के अनुसार कर्मों से होगा। अकाल की लंबी अवधि के दौरान सारपत में विधवा ने विश्वास के साथ परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया और एलिय्याह को अपना अंतिम भोजन दिया। परिणामस्वरूप, उसने ऐसा वरदान प्राप्त किया कि उसके आटे का डिब्बा समाप्त नहीं हुआ और न ही तेल का घड़ा खाली हुआ। इसके विपरीत, जो लोग शारीरिक विश्वास रखते हैं, वे इस तथ्य को अपने दिमाग में जानते हैं, लेकिन जब वे कठिनाइयों में होते हैं, तो वे कार्य नहीं कर सकते। यदि उनके पास जीवन–यापन का खर्च कम है, तो वे कभी–कभी अपना दशमांश नहीं देते और तरह–तरह की भेंट देने में कंजूसी करते हैं। यदि वे वास्तव में विश्वास करते हैं कि जो कुछ वे परमेश्वर के सामने बोते हैं, उसके लिए परमेश्वर उन्हें आशीषों के साथ प्रतिफल देगा, तो वे कभी भी कंजूस नहीं होंगे। लेकिन, क्योंकि वे इसे केवल ज्ञान के रूप में जानते हैं, उनके कार्यों का पालन नहीं होता है।

रोगों की समस्या के साथ भी ऐसा ही है। यदि आप वास्तव में विश्वास करते हैं कि परमे वर वास्तव में सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञानी है, तो आप संसार पर भरोसा नहीं करेंगे। राजा आसा की बीमारी और उनकी मृत्यु के वृत्तांत से हम महसूस कर सकते हैं कि जब परमेश्वर इन विश्वासघाती कामों को देखता है तो वह हमसे कितना निराश हो सकता है। जब राजा आसा को पैरों का रोग हुआ, तब उसने परमेश्वर की नहीं वैद्यों की खोज की। अंत में राजा आसा की मृत्यु हो गई। (2 राजा 16:12, 13) याकूब 2:26 में यह कहा गया है, "क्योंकि जैसे देह आत्मा, बिना मरी हुई है, वैसे ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है।" मरे हुए विश्वास के साथ हम उत्तर और आशीष प्राप्त नहीं कर सकते हैं। हम उद्धार से दूर भी गिर सकते हैं। कृपया, इस तथ्य को याद रखें और कर्मों के साथ विश्वास रखें।

2. आत्मिक विश्वास क्या है?

आत्मिक विश्वास के साथ, आप उद्धार प्राप्त कर सकते हैं और विश्वास कर सकते हैं भले ही चीजें आपके अपने सिद्धांतों और विचारों से सहमत न हों। यह इस बात पर भरोसा करने का विश्वास है

विश्वास का अंगीकार

1. मानमिन सैंट्रल चर्च विश्वास करता है कि बाइबल परमेश्वर का दिया गया वचन है जो सिद्ध और दोषरहित है।
2. मानमिन सैंट्रल चर्च एकता में विश्वास करता है और त्रिएक परमेश्वरः पवित्र पिता परमेश्वर, पवित्र पुत्र परमेश्वर और पवित्रआत्मा परमेश्वर, के कार्य में विश्वास करता है,
3. मानमिन सैंट्रल चर्च विश्वास करता है कि केवल यीशु मसीह के लहू के द्वारा हमें हमारे पापों से क्षमा मिलती है।
4. मानमिन सैंट्रल चर्च यीशु मसीह के पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण, उसके दूसरे आगमन, एक हजार वर्ष का राज्य और अनन्त स्वर्ग, पर विश्वास करता है।
5. मानमिन सैंट्रल चर्च के सदस्य हर बार जब एकत्र होते हैं वे अपने विश्वास का अंगीकार "प्रेरितों के विश्वास" के द्वारा करतें है और उसकी धारण के मूल तत्व के प्रतिशब्द पर विश्वास करतें है।

"(परमेश्वर) वह तो आप ही सब को जीवन और स्वास और सब कुछ देता है।" (प्रेरितों के काम 17:25)

"और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें।" (प्रेरितों के काम 4:12)

gcntvhindi Youtube Live Worship

सीधा प्रसारण समय सारणी
रविवार्य आराधना (1) : प्रातः 8 बजे
रविवार्य आराधना (2) : प्रातः 11:30 बजे
बुधवार्य आराधना : शामः 7:30 बजे
शुक्रवार आराधना : शामः 7:30 बजे
दानिय्येल प्रार्थना प्रतिदिनः शामः 5:30 बजे
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें +91 99716 24368

कि कुछ भी नहीं से कुछ बनाया जा सकता है। जब आपके पास इस प्रकार का विश्वास होता है, तो आप बिना किसी संदेह के विश्वास कर सकते हैं कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी को बनाया और वह मनुष्यों के जीवन, मृत्यु, भाग्य और दुर्भाग्य को नियंत्रित करता है। आप हर चीज में परमेश्वर को स्वीकार करेंगे और उस पर भरोसा करेंगे। हालाँकि, मनुष्यों के पास इस तरह का आत्मिक विश्वास नहीं हो सकता जैसा वे चाहते हैं। हमारे पास केवल आत्मिक विश्वास हो सकता है जो परमेश्वर ने प्रत्येक को दिया है (संदर्भः रोमियों 12:3)। विश्वास का यह परिणाम प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग–अलग होता है। आप अपने आत्मिक विश्वास के अनुसार उसी सीमा तक उत्तर प्राप्त कर सकते हैं जो भी आप प्रार्थना करते हैं। यदि मनुष्य अपनी इच्छा के अनुसार आत्मिक विश्वास रख सकता है, तो ऐसा कोई नहीं होगा जिसे उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर और आशीषें प्राप्त न हुई हो। परमेश्वर आपको उतना ही आत्मिक विश्वास देता है जितना आप सत्य का पालन करते हैं। जब आप इस आत्मिक विश्वास के साथ प्रार्थना करते हैं, तो आपको अपनी प्रार्थना का उत्तर अवश्य मिलेगा।

"अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है" (इब्रानियों 11:1)। इसका अर्थ यह हुआ कि जब आप विश्वास के द्व ारा उन वस्तुओं की आशा करते हो, जो आपको नहीं मिलीं और पूरी नहीं हुई हैं, तो वे आपको दी जाएंगी। यदि आप शारीरिक विश्वास के साथ किसी चीज की प्रतीक्षा करते हैं, तो कुछ भी नहीं देखा जा सकता है। परन्तु जब आप आत्मिक विश्वास से देखते हैं, तो आप अपने विश्वास का प्रमाण देख सकते हैं। जब मूसा ने आत्मिक विश्वास की आँखों से देखा और परमेश्वर के वचन का पालन किया, तो लाल समुद्र विभाजित हो गया (निर्गमन 14:21)। यहोशू और इस्राएलियों के मामले में, जब उन्होंने भी आत्मिक विश्वास की आँखों से देखा और 7वें दिन यरीहो नगर के चारों ओर घूमकर और जयजयकार करते हुए परमेश्वर के वचन का पालन किया, तो नगर की शहरपनाह गिर गई (यहोशू 7)। तुम विश्वास ही से जान गए हो कि परमेश्वर ने अपने वचन के द्वारा आकाश और पृथ्वी को शून्य से बनाया है (इब्रानियों 11:3)। इसलिए, जब आप अपने आत्मिक पिता सर्वशक्तिमान परमेश्वर से विश्वास के द्वारा माँगते हैं, तो आप जो भी प्रार्थना करते हैं वह प्राप्त हो सकता है। इस तथ्य को भी आत्मिक वि वास से ही समझा और वि वास किया जा सकता है।

3. आप आत्मिक विश्वास कैसे रख सकते हैं?

सबसे पहले, आपको उन सभी विचारों और सिद्धांतों को दूर करना होगा जो आपको आत्मिक विश्वास रखने से रोकते हैं।आपका सारा ज्ञान, सिद्ध ांत, सोचने के तरीके और मूल्य सही नहीं हैं। केवल परमेश्वर का वचन ही अनंत सत्य है। यदि आप अपने स्वयं के ज्ञान और सिद्धांतों के सही होने पर जोर देते हैं, तो आप न तो परमेश्वर के वचन को स्वीकार कर सकते हैं और न ही आत्मिक विश्वास रख सकते हैं। यदि संसार से सीखी हुई बातें परमेश्वर के वचन से मेल नहीं खातीं, तो आपको उन विचारों और सिद्धांतों को पूरी तरह से नष्ट करना होगा (2 कुरिन्थियों 10:5, रोमियों 8:7)।

दूसरा, आपको परमेश्वर के वचन को मेहनत से सुनना और सीखना है, और फिर उसका अभ्यास करना है। यदि आप अपने हृदय को सत्य से भरेंगे तो असत्य जो सत्य के विरुद्ध है वह आपके पास से निकल जाएगा और आपका हृदय साफ हो जाएगा। जिस हद तक आप परमेश्वर के वचन को यत्न से सुनते और सीखते हैं और उसका अभ्यास करते हैं, परमेश्वर आपको अधिक आत्मिक विश्वास देता है (रोमियों 10:17)। जैसा कि 1 यूहन्ना 3:21, 22 में लिखा है, हे प्रियो, यदि हमारा मन हमें दोष न दे, तो हमें परमेश्वर के साम्हने हियाव होता है। और जो कुछ हम मांगते हैं, वह हमें उस से मिलता है क्योंकि हम उस की आज्ञाओं को मानते हैं और जो उसे भाता है वही करते हैं। जब आप वचन सुनते हैं, तो आपको पहले इसे ज्ञान के रूप में रखना चाहिए और फिर वचन का पालन करके इसे आत्मिक विश्वास में बदलना शुरू करना चाहिए। सिर्फ इसलिए कि आप पियानो बजाने के लिए एक संगीत स्कोर याद कर सकते हैं इसका मतलब यह नहीं है कि आप पियानों को अच्छी तरह से बजा सकते हैं। आपको पियानों बजाने का अभ्यास करना होगा। परमेश्वर के वचन के साथ भी ऐसा ही है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप परमेश्वर के वचन को कितना पढ़ते और सुनते हैं, यदि आप इसका अभ्यास नहीं करते तो यह किसी काम का नहीं है।

यद्यपि आप आज्ञापालन करने का प्रयास करते हैं, ऐसा समय होते हैं जब आप तुरंत आज्ञापालन नहीं कर पाते हैं। तब, आपको उत्साहपूर्वक प्रार्थना करनी होगी और आज्ञापालन करने की ताकत प्राप्त करनी होगी। यदि आप प्रार्थना के साथ भी नहीं मान पातें, तो आप ताकत प्राप्त करने के लिए वाचा की प्रार्थना, रात की प्रार्थना या उपवास भी कर सकते हैं। यदि आप अपने सच्चे हृदय से परमेश्वर के अनुग्रह और सामर्थ की खोज करते हैं, तो परमेश्वर निश्चित रूप से आपको वह ताकत देता है जो आपको आज्ञापालन करने में सक्षम बनाती है। इन आशीषों का अनुभव करने के बाद, आप और भी बड़ी बातों का पालन कर सकते हो। इस प्रक्रिया के माध्यम से आपका आत्मिक विश्वास बढ़ता है और यह पूर्ण माप तक पहुँचता है। आप पूरी तरह से किसी भी बात का पालन कर सकते हैं भले ही परमेश्वर आपको मनुष्यों के विचार से कुछ असंभव करने की आज्ञा देते हैं।

एक बार जब आप वचन का अभ्यास करके आत्मिक विश्वास प्राप्त कर लेते हैं, तो आप पर परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार आशीषें आती हैं। आपकी आत्मा समृद्ध होगी, आप स्वस्थ रहेंगे और आपके हृदय की इच्छा पूरी होगी।

मसीह में प्रिय भाइयों और बहनों,

मैं प्रभु के नाम से प्रार्थना करता हूं कि आप इस पृथ्वी पर जो कुछ भी मांगते हैं उसका उत्तर प्राप्त कर सकें और भविष्य में सबसे शानदार स्वर्गीय निवास स्थान, नए यरूशलेम में भी प्रवेश कर सकें।

परमेश्वर के उत्तर और आशीषों का मार्ग, हम अपने सोचने के तरीके को कैसे बदल सकते हैं?

अगर हम अपने सोचने के मौजूदा तरीके से चिपके रहते हैं, तो हमारे लिए आत्मिक उत्तर पाना असंभव है। चाहे वे कितनी भी तुच्छ चीजें क्यों न हों, क्योंकि आपके पास शारीरिक विचार हैं, ऐसे विचार जमा होते रहते हैं और शारीरिक विचारों का मार्ग निर्मित हो जाता है।

उत्तर और आशीषें आप तब प्राप्त कर सकते हैं जब आप सबसे पहले विचारों के द्वार बंद करते हैं, और उत्साहपूर्वक प्रार्थना के साथ अपने विचारों को आत्मिक विचारों में बदलने का अभ्यास करते हैं!

"सकारात्मक सोच रखना, विश्वास के साथ सब कुछ देखना, आनन्दित होना और धन्यवाद देना उत्तर और आशीषें पाने का मार्ग है"

प्रभु में सकारात्मक सोचने का तरीका क्या है?

यह किसी भी स्थिति में वास्तविक समस्याओं या आजमाइशों को देखना नहीं है, बल्कि विश्वास के साथ स्वयं को देखना है जो समस्याओं के द्वारा बदल जाएगा और आजमाइशों से गुजरने के बाद आने वाली आशीषों की आशा करता है। मान लीजिए किसी ने आपको धोखा दिया। आपको यह सोच कर दर्द में द्वेष नहीं देना चाहिए, 'तुमने मुझे धोखा देने की हिम्मत कैसे की?' इसके बजाय बेहतर होगा कि आप परमे वर के प्रेम को महसूस करने की कोशिश करे, उसे आत्मिक प्रेम से देखें, और अपने विचार बदलें। क्या आप किसी कठिन परिस्थिति में फंस गए हैं? तब फिर आप और अधिक परिपक्व होने की आशा रखें और एक व्यापक मन रखें जो किसी घटना के माध्यम से सबको गले लगाता है।

यदि कोई ऐसा कार्यकर्ता नहीं है जो उत्साहपूर्वक आपके साथ मिलकर काम करें, तो आप इसे परमेश्वर की सामर्थ का अनुभव करने का अवसर क्यों नहीं बनाते, जो आपको मजबूत बना सकता है? यह ध्यान देने वाली बात है कि एक पवित्र हृदय को प्राप्त करने के दौरान, आपमें पाई जाने वाली बुराई के कारण आप खेदित हो सकते हैं और निराशा महसूस कर सकते हैं। इस मामले में भी, अपने भविष्य के बारे में सोचें जो जल्दी बदल जाएगा और धन्यवाद दें।

जब आप अपने विचार को सकारात्मक तरीके से बदलते हैं, सब कुछ विश्वास के साथ देखते हैं और परमे वर पर वि वास करते हैं, तो आप विश्वास से जो कुछ करते हैं उस पर वह आशीषें उण्डेलेगा।

"शारीरिक विचारों को आत्मिक विचारों में बदलने के लिए, उत्सुक प्रार्थनाओं के द्वारा वचनों का अभ्यास करना है!"

जब हम कुछ देखते हैं तो सोचने का अभ्यस्त पैटर्न स्वतः प्रतिक्रिया देता है। मान लीजिए कि आप किसी ऐसे व्यक्ति को देखते हैं जो बहिर्मुखी है और आपको लगता है कि वह आगे बढ़ रहा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि आप आमतौर पर ऐसा महसूस करते हैं जब आप उसके जैसे लोगों को देखते हैं। साथ ही, यदि आपका बार–बार किसी के साथ झगडा होता है, तो ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि आप अपने स्वयं के शारीरिक विचारों में उनके मजबूत बिंदुओं पर ध्यान नहीं देते हैं, जो आपको उनके करीब आने से रोकता है। यह सोचने का तरीका बदलने के लिए कि जो कि दखल देनेवाले भारीरिक विचार बन गए हैं, आपको पहले 'विचारों के लिए द्वार बंद करने' का प्रयास करना चाहिए। इन सबसे ऊपर, अपने बारे में एक वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण रखें। कल्पना कीजिए कि आप खुद को देख रहे हैं और आपके चारों ओर दरवाजे हैं। जब असत्य विचार आपके पास आएं, तो असत्य विचार के लिए द्वार बंद कर दें और विचार को आत्मिक विचार में बदल दें। यदि आप लगातार इसका अभ्यास करते हैं और विचारों के दरवाजे बंद करने की कोशिश करते हैं, तो ऐसे विचार 'दरवाजा बंद करने' की एक भी कोशिश से अपना रास्ता नहीं बना सकते।

अभ्यास के साथ–साथ आप अपने विचारों को आत्मिक विचारों में बदलने का प्रयास करते हैं। तो, ारीरिक विचारों का द्वार लुप्त हो जाएगा और आत्मिक विचारों का मार्ग खुल जाएगा। जब आप इस तरह के प्रयास से उत्साहपूर्वक प्रार्थना करते हैं, तो आप पवित्र आत्मा की सहायता से परमेश्वर की सामर्थ का अनुभव कर सकेंगे।

भलाई की सामर्थ

बाइबल में कुछ लोग हैं जिन्होंने गरीब पड़ोसियों के लिए भलाई का कार्य किया। जब वे कठिनाइयों का सामना कर रहे थे तो परमेश्वर ने उनके भले कार्यों का प्रतिफल आशीषों के साथ दिया। तबीता लगन से दूसरों की मदद करती थीं। जब वह मर गई, तो उसे परमेश्वर की आशीष से मृत्यु से वापस जीवित कर दिया गया। बदले में कुछ न चाहते हुए उसने भलाई का अभ्यास किया। उसे अपने दिल से भले काम करने में मजा आता था। इसलिए परमेश्वर ने उसे बहुत आशीषें दी। एक भला कार्य जो परमेश्वर के हृदय को प्रभावित करता है, वो आशीषों की कुंजी है।

"हम यहाँ भारत में जीवित परमेश्वर से मिलें।"

ईश्वरीय चंगाई सभा में एक्टिंग सीनियर पास्टर सुजिन ली सामर्थी रूमाल के द्वारा बीमारों के लिए प्रार्थना करते हुए (प्रेरितों के काम 19:11–12)।

मेरे बेटे का ऑटिज्म ठीक हो गया है। यह एक चमत्कार है!

2019 में, भले ही मेरा बेटा श्रींजोय तीन साल का हो गया, वह "माँ" और "पापा" के अलावा कुछ नहीं बोल सकता था!" मेरे पति और मैंने सोचा कि यह अजीब था, और हम उसको अस्पताल ले गए। और हम यह सुनकर चौंक गए कि उसे ऑटिज्म है। मुझे नहीं पता था कि उस उदासी में, मैं क्या करूं जो ऐसा लग रहा था जैसे आसमान टूट रहा हो।

एक दिन जब मेरा बहुत ही दर्द भरा समय चल रहा था, यूट्यूब सर्च करते हुए मुझे GCNTV HINDI और दिल्ली मानमिन चर्च मिला। हालाँकि, हम पहले केवल औपचारिक रूप से आराधना सभा में शामिल होते थे।

2020 में, श्रींजोय चार साल का हो गया और उसका स्कूल में एडमिशन हुआ, लेकिन वो हमेशा दूसरे बच्चों के साथ घूमने के बजाए अकेले रहने की कोशिश करता था। उसकी मैम ने कहा कि बोलने पर वह जवाब नहीं देता, ना ही कुछ बोलता और पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पाता, जिससे अन्य बच्चों की पढ़ाई बाधित होती थी। उसके प्रधानाचार्य ने कहा कि उसे ऑटिस्टिक बच्चों के लिए एक विशेष स्कूल में भेजा जाना चाहिए। यहाँ तक कि डॉक्टर ने भी कहा कि उसे एक विशेष स्कूल में भेजा जाना चाहिए। अपने बेटे को विशेष स्कूल में भेजना मेरे लिए बहुत पीड़ादायक था।

जब हमने इस स्थिति का सामना किया, तो मैं और मेरे पति केवल परमेश्वर पर निर्भर हो गए। हमने अपने पूरे दिल से सभा में सर्वशक्तिमान परमेश्वर की आराधना की, इस उम्मीद से कि हमारा बेटा ठीक हो जाएगा। जैसा कि मानमिन सेंट्रल चर्च के सीनियर पास्टर, डॉ जेरॉक ली के संदेशों से मुझे महान अनुग्रह मिला, मेरा विश्वासी जीवन बदल गया।

मैं प्रभु के दिन को पवित्र मानते हुए और संपूर्ण दशमांश देते हुए परमेश्वर की इच्छा के बारे में और अधिक जानना चाहती थी, इसलिए मैंने डॉ. जेरॉक ली के बहुत से संदेशों को सुना, जैसे की 'क्रूस का संदेश', 'विश्वास का परिमाण', और 'भलाई'। इस बीच, मुझे उत्तरों की कुंजी मिल गई और मैं बहुत खुश हुई जैसे कि मुझे कोई खजाना मिल गया हो। अर्थात, मैंने यह वचन सुना, "ऐसे मामले हैं जिनमें बच्चे अपने माता–पिता के पापों के कारण ऑटिज्म से ग्रसित होते हैं।"

जैसा कि मैंने इस वचन को सुना, मैंने यह समझने की कोशिश की, कि किस तरह के माता–पिता के पापों के कारण मेरे बेटे में यह लक्षण है। जिस दिन मैंने दिल्ली मानमिन चर्च के पास्टर जॉन किम की अगुवाई में "जूम मीटिंग" में भाग लिया, वचन सुनते समय मुझे एहसास हुआ कि 'व्यभिचार' हमारी समस्या थी, और मैंने आँसूओं के साथ इसके लिए पश्चाताप किया।

2021 में, एक्टिंग सीनियर पास्टर, डॉ. सुजिन ली की अगुवाई में ईश्वरीय चंगाई सभा में जीसीएनटीवी हिंदी के माध्यम से प्रार्थना ग्रहण करने के बाद, मैंने अपने हाथ के दर्द से चंगी पाई थी, मैं जो हाथ दर्द के कारण उठा नहीं पा रही थी। जैसा कि मैंने व्यक्तिगत रूप से इस कार्य का अनुभव किया, मैं अपने बेटे के ऑटिज्म की चंगाई के लिए और अधिक उत्सुक हो गई।

2022 के मानमिन समर रिट्रीट के दौरान, मैंने अपने बेटे की चंगाई के लिए ईमानदारी से प्रार्थना करना शुरू कर दिया। फिर, परमेश्वर के अनुग्रह से, मुझे जागृति मिली, और मैंने उस व्यक्ति को क्षमा कर दिया जिसे मैं क्षमा नहीं कर पा रही थी, और मेरे पति ने भी अपने पापों का पश्चाताप किया। 1 अगस्त, 2022 को मानमिन समर रिट्रीट शुरू हुआ। जीसीएनटीवी हिंदी के माध्यम से, मैंनें और मेरे पति ने एक्टिंग सीनियर पास्टर डॉ. सुजिन ली की ईश्वरीय चंगाई सभा के दौरान विश्वास के साथ बीमारों के लिए की गई प्रार्थना ग्रहण की।

उसके बाद हमारे परिवार में एक चमत्कार हुआ। जब मैंने "श्रींजोय!" कहा, तो उसने मेरी तरफ देखा, मेरे सवालों का जवाब दिया और वह आसानी से पूरा वाक्य बोल पा रहा था।

अब मेरे पड़ोसी मेरे बेटे को देखते हैं और खुश होते हैं कि वह ऑटिस्टिक बच्चे जैसा नहीं दिखता। मेरी सास ने भी प्रभु को ग्रहण किया और जीसीएनटीवी हिंदी के माध्यम से मानमिन सेंट्रल चर्च की आराधना सभा में हमारे साथ शामिल हो रही हैं। हाल्लेलुयाह!

मैं त्रिएक परमेश्वर को सारा धन्यवाद और महिमा देती हूं जिन्होंने डॉ. जेरॉक ली के अनमोल संदेशों के माध्यम से चंगाई और उत्तर का मार्ग स्पष्ट रूप से दिखाया और हमें आशीषों के मार्ग की ओर ले गया।

डिकनेसीस स्वप्ना (उम्र 37, बिहार, भारत)

"मेरी रीढ़ की हड्डी का दर्द गायब हो गया है, और मेरे पति अपने रोजमर्रा के जीवन में बेहतर कर पा रहे हैं।"

गीता सिस्टर (उम्र 31, गोंडा भारत)

अपने पति की देखभाल करते समय मेरी रीढ़ की हड्डी में समस्या थी, और मैं दर्द के कारण बहुत देर तक बैठ नहीं सकती थी, और सांस लेना मुश्किल हो जाता था। मेरे पति (सुनील कुमार, उम्र 35) दुर्घटना की वजह से चलने में पीड़ित थे, जो बाद में स्पाइनल डिस्क और अपक्षयी काठ रोग(Degenerative Lumbar Disease) में विकसित हो गया। आर्थिक कठिनाइयों के कारण,

मेरे पति को उचित चिकित्सा उपचार के बिना दर्द में रहना पड़ा, और मेरे परिवार को अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इस बीच, मैंने अपने पति की चिकित्सक जांच के लिए बडी मुश्किल से पैसे जुटाए, लेकिन मैंने सुना कि इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि वह सर्जरी से भी पूरी तरह ठीक हो सकते हैं, और यह कि वे स्थायी रूप से विकलांग हो सकते हैं। मेरे पति ने इस भावना के साथ जनवरी 2022 में की आप्रेशन कराया कि कम से कम वो डंडा पकड कर चल सकें। लेकिन नतीजा अच्छा नहीं रहा, इसलिए वो न तो उठ सकते थे और न ही चल सकते थे। यहां तक कि जब वह बाथरूम जाते थे, तब भी मुझे उसे अपनी गोद में उठाना पड़ता था। नतीजतन, मेरी रीढ़ की हड्डी में समस्या हो गई।

एक दिन, मेरे पति ने एक पड़ोसी से सुना कि "यीशु बीमारियों को चंगा करता हैं।" इसके बाद उन्होंने इंटरनेट पर 'बीमारों के लिए प्रार्थना' ढूंढी और यूट्यूब चैनल 'जीसीएनटीवी हिंदी' पर डॉ. जेरॉक ली की "बीमारों के लिए प्रार्थना" वाला उनको वीडियो मिला।

उस समय, मेरे पति, जो बहुत कठिन समय से गुजर रहे थे, उन्होंने कहा कि यदि वे लगभग दो महीने तक चर्च जाने के बाद ठीक नहीं हुए तो वे आत्महत्या कर लेंगे। हालांकि, बीमारों के लिए डॉ. जेरॉक ली की प्रार्थना ग्रहण करने के बाद, उनके दिल को सुकून मिला और उन्हें चंगा होने की आशा मिली।

इसलिए, यूट्यूब वीडियो पर पोस्ट की गई दिल्ली मानमिन चर्च का फोन नम्बर देखने के बाद, हमने फोन किया और यीशु मसीह के सुसमाचार को सुना। हमने पश्चाताप किया और पवित्र आत्मा प्राप्त करने के लिए प्रार्थना ग्रहण की।

बाद में, दिल्ली मानमिन चर्च के मार्गदर्शन में, हम 25 मई, 2022 को ऑनलाइन मानमिन सेंट्रल चर्च की दानिय्येल प्रार्थना सभा में शामिल हुए, इस आशा के साथ कि हमें प्रभु से उत्तर मिल सके। और प्रार्थना सभा के बाद एक आश्चर्यजनक बात हुई। मेरी पीठ का दर्द, जो मुझे चार महीने से अधिक समय से था, पूरी तरह से गायब हो गया था, और लंबे समय तक बैठने पर भी कोई समस्या नहीं हुई और सांस लेने में भी कोई समस्या नहीं थी। हाल्लेलुयाह!

इतना ही नहीं, बल्कि मेरे पति की हालत में भी सुधार हुआ, और वे अपने आप ही बाथरूम जाने और सीढ़ियों से ऊपर जाने में सक्षम हो गए। बीच में, वह चिंतित थे और वह डर से पीड़ित था कि मैं उन्हें छोड क्योंकि वह अपने दम पर कुछ नहीं कर सकते थे, लेकिन अब वह खुश है कि उनकी स्थिति में सुधार हुआ है और अब वह अपने दैनिक जीवन के कार्य स्वंय कर पा रहे है। भारत में, 'जीसीएनटीवी हिंदी' के माध्यम से, हम कोरिया में मानमिन सेंट्रल चर्च की आराधना सभाओं में भाग लेते हैं और प्रभु के प्रेम से भरे हुए विश्वासी जीवन जीते हैं।

मैं परमेश्वर को धन्यवाद और महिमा देता हूं जो जीवित हैं और जो हमारे रोगों को चंगा करते हैं।

GCNTV HINDI
अब आप डा. जेरॉक ली के संदेशों को सुनने हेतू हमारें चैनल पर जाएं।
Youtube/gcntvhindi
100 से अधिक भाषाओं में डा. जेरॉक ली के संदेषों को प्राप्त करें
क्रूस का संदेष, प्रकाषितवाक्य स्वर्ग, नर्क, भलाई, आषीषें इत्यादि
Visit करें : www.jaerocklee.com ; www.manmin.in
संपर्क करें
99716 24368